EDITORIAL

"MAYDAY"

May Day is a International workers day May Day cannot be treated as festive day or holiday. Thousands of workers sacrified their lives on this day at "Chicago" to get their rights. Before the Nineteenth Century, there was bitter attack on workers and they were seen as Slaves in the society. The workers fought many struggles to get their legitimate demands and succeeded on May Day. May day will be remembered for ever. It is a glorious day to remember the sacrifices and Martyrdom of workers to achieve '8' hours duty per day. Now, we are conducting many struggles against Anti Labour Policies of Govt, with the spirit of May Day.

What is origins of May Day ? In the late nineteenth century, the working class was in constant struggle to gain the 8 hours work a day. Working conditions were severe and it was quite common to work 10 to 16 hours a day in unsafe conditions. Death and Injury were common at many work places. Thousands of men, women and children were dying needlessly every year in the work place, with life expectancy as low as their early twenties in some industries. These were the facts happened in 1860s.

When '8' hours duty concept developed in the minds of all working class, conventions were held at many places in America. At first socialists tried to control the masses, later Anarchists entered into the movement. They all emphasized the need of 8 hours duty to workers at all working places.

A National convention was held in 1884 at Chicago, the Federation of Organized Trades and Labour Unions proclaimed that "eight hours" per day is legal right of worker. The said proclamation was largely supported by strikes and demonstrations in America. Millions of workers came to street at Chigago and demanded '8' hours duty on 4.5.1886. A rally of workers was mobilized very calmly and with strong determination to abolish slavery system at the working place. But, the Government/employers were also well planned and gun downed the workers mercilessly in the 'Hay Market' at Chicago. On that day thousands of innocent workers lost their lives to the cause 8 hours duty. More than 3,00,000 workers in 13,000 business establishments walked off their jobs in the fist May day to protest against the vindictive act of Government. **The Government felt that Com Parson, Com. Spices, Com Engel and Com. Fisher were responsible for the said incident. So, they were hanged on 11.5.1887.** Then after, workers, many ideologists and fundamentalists condemned the brutal act of the government and called all the workers in the world be united to fight out for securing justified demands. **They met in Paris in 1889 and decided to celebrate May 1st as International Workers Day. In all countries, May day was observed from 1990.**

But, in our country, we started celebrating May day from 1923. Today we see tens of thousands of activities embracing the ideas of "Hay Market" Martyr and those established May day as an international workers day. Ironically, May day is an official holiday in 66 countries and unofficially many more countries celebrating May Day.

In DOT period there were casual mazdoors/ part time workers/ayas doing duties more than 8 hours. They were also not having paid weekly off and social securities. Knowing all the facts, Com. OPG, Com. Chandrashekar have taken lot of pains to regularize them in DOT/BSNL including Ayas/part time workers. At present more than one lakh contract mazdoors are doing duties similar to regular staff. After regular struggles, they got EPF deduction and ESI facilities. The present Government has introduced fixed time employment, which increases unemployment and boost to private sections.

Now, we are all fighting unitedly to improve the financial condition of BSNL. But the policies of Government ruined the labour laws in the country. And cutting the rights of workers one by one. The Government is directly/ indirectly supporting and strengthening private corporates to close down the PSU's in the country. So, we remember the 'Hay Market" sacrifices. We took a pledge on May Day that we determined to save BSNL and all employees at any cost.

संपादकीय

मई दिवस

मई दिवस, मेहनतकश आवाम का अंतर्राष्ट्रीय संकल्प दिवस है। यह ना तो कोई त्यौहार है और ना ही आनंद मनाने का दिन है। वस्तुतः यह संघर्ष भीषण, संघर्ष त्याग एवं बलिदान को याद करने का दिवस है, जो उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में दुनिया भर के श्रमिक समुदाय द्वारा शोषण, उत्पीड़न एवं गुलामी के विरूद्ध लड़ी गई लड़ाई को याद करने का दिवस है। आज जो सुख, सुविधा श्रमिक समुदाय को उपलब्ध है, ये सभी उन संघर्षों का प्रतिफल है। अभी आज भी वर्तमान में मई दिवस की प्रासंगिकता पुनः ताजी हो जाती है, जब फिर से उस प्रकार की व्यवस्था लागू की जा रही है जिसके विरूद्ध संघर्ष करके श्रमिकों ने ऐतिहासिक मई दिवस की नींव रखी थी।

मई दिवस की बुनियाद क्या है?

उन्नीसवीं सदी में पूरे विश्व में मजदूरों/श्रमिकों के काम के घंटे तय नहीं थे। मिल मालिक एवं सरकारी तंत्र श्रमिकों से 12 घंटे से 16 घंटे तक काम लेते थे। मजदूर, जो पुरूष, महिला एवं अव्यस्क, किशोर होते थे, कार्यस्थल पर उचित व्यवस्था नहीं होने, शुद्ध पेयजल नहीं मिलने तथा अन्य हानिकारक तत्वों के बीच कार्य करते अकाल मृत्यु का शिकार हो जाते थे। ऐसा 1860 के दशकों में हो रहा था।

आठ घंटे कार्यावधि की मांग धीरे–धीरे मजदूरों के दिमाग में आने लगी। इस मांग को लेकर अमेरिका के कई शहरों में हड़ताल, प्रदर्शन आदि आयोजित किये जाने लगे।

1884 में शिकागो में एक राष्ट्रीय कन्वेंशन आयोजित की गई। संगठित क्षेत्र के श्रमिकों एवं श्रम संगठनों ने आठ घंटे प्रतिदिन, कार्यावधि की मांग उठाई। मजदूरों ने कहा आठ घंटे कार्य हमारा कानूनी अधिकार है। इस मांग के समर्थन में हड़तालें एवं प्रदर्शन हुए।

दिनांक 4.5.1886 को शिकागो शहर के सड़कों पर आठ घंटे कार्यावधि की मांग के समर्थन में लाखों मजदूर सड़क पर आ गये। श्रमिक शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे परंतु गुलामी प्रथा की समाप्ति के प्रति उनकी निष्ठा प्रबल थी। जब मेहनतकशों की समूह "हे मार्केट" से गुजर रही थी तो सरकारी तंत्र एवं नियोक्ताओं के गुंडों ने गोलियों की बौछार मजदूरों पर कर दी। हजारों मजदूर आठ घंटे कार्यावधि की मांग हेतु मारे गये।

13000 व्यापारिक प्रतिष्ठानों के तीन लाख श्रमिक अपने प्रतिष्ठान को छोड़ दिये तथा सिकागो के नरसंहार का विरोध किया। सरकार के नजर में कॉ. पार्सन, कॉ. स्पाइस, कॉ. एन्जेस और कॉ. फीशर इस बड़े आंदोलन के लिए दोषी ठहराया गया तथा इन्हें फांसी पर लटका कर मौत के घाट उतार दिया। इन्हें 11.5.1887 को फांसी दी गई। सरकार के इस कार्यवाई को विचारवान लोगों तथा बुद्धिजीवियों समेत सभी तबके के लागों ने निंदा की। श्रमिक समुदाय ने दुनिया के मजदूरों को एकजुट होकर अमेरिकी सरकार की बर्बर हिंसा के विरूद्ध गोलबंद होने का आह्वान किया। 1889 में पेरिस में श्रमिकों के एक विशाल सम्मेलन में यह तय कि प्रतिवर्ष पहली मई को दुनिया भर में श्रमिक दिवस मनाई जायगी और 1890 से पहली मई को पूरे विश्व में श्रमिक दिवस मनाई जाने लगी।

हमारे भारत वर्ष में मई दिवस मनाने का प्रचलन 1923 से आरंभ हुई, उसके पूर्व ए.आई.टी.यू.सी का प्रादुर्भाव हो चुका और इनके पहल पर ही मई दिवस मनाने की शुरूआत हुई। दुनिया के 66 देशों में मई दिवस को अवकाश रहती है तथा अनौपचारिक तरीके से बहुत सारे मुल्कों में श्रमिक मई दिवस आयोजन करते हैं।

अस्सी के दशक में अपने देश में दूरसंचार विभाग के अंतर्गत एक लाख से अधिक दैनिक वेतनभोगी मजदूर कार्यरत थे, जिन्हें कॉ. ओ.पी. गुप्ता ने आठ घंटे कार्य दिवस की मांग की तथा इसे लागू कराया फिर इन मजदूरों का स्थायीकरण भी कॉ. ओ.पी गुप्ता के नेतृत्व में पूर्ण हुआ।

अभी भी बी.एस.एन.एल.के अधीन लगभग एक लाख श्रमिक ठेकेदारों के मार्फत काम कर रहे हैं, जिन्हें सरकार द्वारा निर्धारित वेतन भी नहीं मिलते। लगातार संघर्ष के बाद इन्हें इ.पी.एफ एवं इ.एस.आई.सी की सुविधा प्राप्त हुई हो।

बी.एस.एन.एल कर्मचारियों के लिए आज भी मई दिवस की प्रासंगिकता है क्योंकि सरकारी कर्मी के स्तर से लोक उपक्रम का कर्मी बनाने वाली सरकार अब श्रमिकों की संख्या को बी. एस.एन.एल का गिरावट मानकर इनकी संख्या कम करने के विभिन्न गैर वांछित योजना पर विचार कर रही है।

सरकार एवं सरकारी तंत्र निजी कंपनियों को प्रोत्साहित करती है एवं बी.एस.एन.एल को बंद करने के सारे उपाय कर रही है। एक–एक कर कर्मचारियों की, समस्त सुविधाएं समाप्त की जा रही है। वेतन पुनरीक्षण 1.1.2017 से लंबित है। कंपनी की आर्थिक जीवंतता खतरे में है। अतः आइये इस मई दिवस पर संकल्प लेते है कि हम एकजुट होकर बी.एस.एन. एल एवं इसके कर्मचारियों की सुरक्षा हर हाल में करेंगे। **सभी पाठकों को मई दिवस की क्रांतिकारी शुभकामनाएं।**